३. नाम चर्चा

– नरेंद्र कोहली

कहते हैं, हिंदी के कथा साहित्य में गतिरोध आ गया है । ऐसे संकट हिंदी साहित्य में पहले भी आए हैं और अकसर आते रहते हैं । हिंदी में आते हैं तो अन्य भाषाओं के साहित्य में भी आते होंगे पर फिर भी सारी दुनिया का काम चलता रहता है । यह कोई ऐसी कठिनाई नहीं है जिसका कोई समाधान न हो ।

इस गतिरोध से एक भयंकर समस्या दूसरे क्षेत्र में पैदा हो गई है । सारे हिंदी भाषी प्रदेशों में नाम को लेकर गतिरोध आ गया है । कहीं किसी के घर में कोई संतान हुई और मुसीबत उठ खड़ी हुई । कितनी भयंकर समस्या है कि बच्चे का नाम क्या रखें ?

इस कर्तव्य को पूरा करने में मुझे कोई परेशानी नहीं थी पर हिंदी कथा साहित्य के इस गतिरोध ने मेरी गति भी अवरुद्‌ध कर दी है । पहले यह होता था कि किसी ने नाम पूछा और हमने कोई भी पत्रिका उठा ली, जिस किसी कहानी की नायिका या नायक का नाम दिखा, वही टिका दिया । लोग होते भी इतने सरल थे कि झट वह नाम पसंद कर लेते थे ।

अब हिंदी का कथा लेखक अपनी कहानियों में नाम रखने से कतराने लगा है । पचासों कहानियाँ पढ़ जाओ तो कहीं एकाध नाम मिलता है; नहीं तो लोग 'यह', 'वह' से काम चला लेते हैं । हर कहानी के नायक का नाम 'वह' और मेरी बात मान अपनी संतान का नाम 'वह' रखने को कोई भी तैयार नहीं । नाम हिंदी का कहानी लेखक नहीं रखता और परेशानी मेरे लिए खड़ी हो गई !

मेरे मस्तिष्क में एक साहित्यिक टोटका आया । मैंने सोचा, 'कथा साहित्य में गतिरोध आने पर भी तो आखिर हिंदी कहानी पत्रिकाओं का संपादक अपना कार्य किसी प्रकार चला ही रहा है न । कैसे चलाता है वह ?'

थोड़ी-सी छानबीन से पता चला कि कोलकाता और बनारस में बहुत दूरी नहीं है । बस, कोलकाता से बाँग्ला कहानियाँ बनारस में आ जाती हैं । मैंने हजारों-लाखों बाँग्ला नामों को पीट-पीटकर खड़ा किया और खड़ी बोली के नाम बना लिए ।

इस बार प्रादेशिकता आड़े आई । मेरे भाई-बंधु, मित्र तथा अधिकांशतः पड़ोसी पंजाबी हैं । दूसरे प्रदेशों के लोग मेरा पंजाबी अक्खड़पन कम ही सहते हैं, इसलिए अधिक निभती नहीं । एक कश्मीरी

परिचय

जन्म : १९४०, सियालकोट (पंजाब अविभाजित भारत)

परिचय : नरेंद्र कोहली जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं । आपने उपन्यास, व्यंग्य, नाटक, कहानी, संस्मरण, निबंध, आलोचनात्मक साहित्य में लेखनी चलाई है । आप प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेरणा लेकर समकालीन, तर्कसंगत लेखन करते हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गणित का प्रश्न', 'आसान रास्ता' (बालकथाएँ), 'परिणति', 'नमक का कैदी' (कहानी संग्रह), 'परेशानियाँ', 'त्राहि-त्राहि', (व्यंग्य), 'किसे जगाऊँ', 'नेपथ्य' (निबंध), 'प्रविनाद', 'बाबा नागार्जुन' (संस्मरण), 'श्रद्‌धा', 'आस्था' (उपन्यास) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में नरेंद्र कोहली जी ने 'नामकरण की समस्या' पर मनोरंजक प्रकाश डाला है । नवजात शिशु का नाम रखने के लिए लोग किस तरह परेशान होते हैं, किस-किस तरह के नाम रखना चाहते हैं, इनका लेखक ने हास्य-व्यंग्यपूर्ण विवेचन किया है ।

मेरे पास आए । कश्मीर बहुत सुंदर प्रदेश है । फिर उनकी बिटिया कश्मीर के सौंदर्य से भी अधिक प्यारी थी । उस बच्ची का नाम कुछ ऐसा ही होना चाहिए था, जिसमें कश्मीर का सारा प्राकृतिक सौंदर्य साकार हो सके । मैंने क्षमता भर परिश्रम किया किंतु किसी भी नाम से उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाया । अंततः उन्होंने ही कहा कि यदि मैं कोई नया नाम नहीं दे सकता तो उनके सोचे हुए नाम का हिंदी में कोई अच्छा-सा पर्याय दे दूँ, जो कि उस बच्ची का नाम रखा जा सके।

मैंने उनकी बात मान ली, इसमें मुझे कोई परेशानी नहीं थी । मैंने उनका सोचा हुआ नाम पूछा ।

''रोजलीना ।'' वे बोले, ''इसमें कश्मीर का सौंदर्य, कश्मीर के गुलाब का सौंदर्य, सब कुछ आ जाता है । वैसे पंडित नेहरू भी कश्मीरी थे ।'' वे अत्यंत भावुक हो उठे-''रोजलीना शब्द से ही हमारी बेबी का चेहरा आँखों के सामने घिर जाता है ।''

''नाम तो सुंदर है !'' मैंने स्वीकार किया ।

''बस, कठिनाई इतनी है कि नाम अंग्रेजी में है और हमारे रिश्तेदार इसे हजम नहीं कर पा रहे । आप इसका हिंदी या भारतीय पर्याय दे दें,'' उन्होंने कहा ।

मैंने बहुत सोचा, शब्दकोश उलट-पलट डाले और तब खोजकर उनको 'रोजलीना' का पर्याय दिया, 'गुलाबो' ।

उन्होंने मेरा चेहरा देखा और नाक सिकोड़कर बोले, 'आखिर पंजाबी हो न !''

मुझे तब भी लगा था कि प्रादेशिकता मेरे कर्तव्य में बाधा खड़ी कर रही है ।

अभी कल ही मेरे एक पंजाबी पड़ोसी आए थे । उनके घर पर परम परमेश्वर की किरपा से एक पुत्तर का जनम हो गया था । अतः वे चाहते थे कि मैं उनके सुपुत्तर के लिए कोई सोणा-सा नाम चुन दूँ ।

मैं मान गया । वैसे इतनी जल्दी मैं सामान्यतः माना नहीं करता पर कल रात से एक बड़ा मधुर-सा नाम मेरे मन में चक्कर-भंबीरी काट रहा था । सोचा, 'इनको वही नाम बता दूँ । इनके सुपुत्तर को नाम मिल जाएगा और मुझे उसकी चक्कर-भंबीरी से मुक्ति ।'

मैंने कहा, ''लाला जी ! इसका नाम तो आप रखे 'निकुंज' । बढ़िया नाम है और सारे मुहल्ले में किसी का ऐसा नाम नहीं है ।''

''आप मजाक बढ़िया करते हैं, मास्टर साहब !'' वह दोनों हाथों से ताली पीटकर खिलखिलाए, ''क्या नाम चुना है । कुंभकरन जैसा लगता

आपके घर में होने वाले नामकरण कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र बनाइए ।

है ।'' मैंने कुछ नहीं कहा, चुपचाप उन्हें देखता रहा ।

''ऐसा करो'', वह बोले, ''कोई बढ़िया-सा अंग्रेजी का नाम सोचो । मैंने सोचा है, वेल्कम कैसा रहेगा ? वे खुशी से उछल पड़े । अपने मकान का नाम भी हम इसी पुत्तर के नाम पर वेल्कम बिल्डिंग रखेंगे ।''

मेरी बुद्धि चक्कर खा गई । ऐसे नाम की तो मैंने कल्पना ही नहीं की थी । पिंकी-शिंकी तो लोग नाम रखने लगे हैं । सुना था, किसी ने अपनी बेटी का नाम 'ट्विंकल' भी रखा है । हमारे पड़ोस में एक साहब ने अपने बेटे को 'प्रिंस' घोषित किया है पर वेल्कम ऊँचा नाम था ।

''पहला पुत्तर है न ?'' मैंने पूछा । ''हाँ जी ! पैल्ला, एकदम पैल्ला।'' वह बोले । ''तो ठीक है'', मैं बोला, ''इसका नाम वेल्कम रखिए और दूसरे का फेयरवेल ।''

वे एक साथ दो-दो नाम पसंद कर चल पड़े ।

अभी पिछले दिनों ही क्षेत्रीयता ने मुझे एक बार और पछाड़ दिया । हमारे मकान से चौथे मकान में रहने वाले मेरे पड़ोसी का लड़का तीन वर्ष का हो गया था, पर वे अभी तक उसके लिए एक नाम तक नहीं खोज पाए थे । जैसे-जैसे दिन निकलते जाते थे, उनकी चिंता और भी गहरी होती जाती थी । जब अपने लड़के के लिए एक उपयुक्त नाम तक नहीं ढूँढ़ पा रहे थे तो उसके योग्य कन्या और नौकरी कहाँ से खोज पाएँगे ।

मुझसे मिले तो अपनी चिंता गाथा ले बैठे । जब वे बहुत रो चुके और बहुत रोकने पर भी मेरा हृदय पूरा गल गया और फेफड़ों की बारी आ गई तो मैंने पूछा, ''आखिर समस्या क्या है ?''

''समस्या क्या है ?'' वह बोले, ''बबुआ की महतारी का हठ और क्या ?'' ''क्या हठ है ?'' बहुत चाहने पर भी उनका घरेलू रहस्य पूछने से मैं स्वयं को न रोक सका ।

वह बोले, ''हमारा बबुआ बहुत शोर मचाता है, बहुत ज्यादा । उसकी महतारी कहती है कि उसका नाम उसके शोर मचाने पर ही रखेंगे ।''

मैं चकित हो गया, हठ को सुनकर । यह भी क्या हठ ! लोग गुण पर तो नाम रखते ही हैं पर दोष को लेकर नाम !

मुझे चिंतित देखकर वह बोले, ''कोई नाम सोच रहे हैं क्या ?''

मैंने कहा, ''एक नाम सूझा है । आपके बबुआ के शोर मचाने से मिलता-जुलता नाम । शायद आपको पसंद आए ।''

''हमारी पसंद क्या है'', उनका मुँह लटका ही रहा, ''पसंद तो बबुआ की महतारी को होना चाहिए । बोलिए, क्या नाम सूझा है आपको ?''

''कोलाहल !'' मैंने बताया ।

''कोलाहल !'' उन्होंने दुहराया, ''वैसे तो सुंदर है, पर बबुआ की

संभाषणीय

भारत में सघन वन किन स्थानों पर बचे हैं, इसकी जानकारी के आधार पर आपस में चर्चा कीजिए ।

महतारी को पसंद नहीं आवेगा ।''

''क्यों ?'' मैंने पूछा ।

बोले, नाम तो कोई हमारे देसवा जैसा ही होना चाहिए । जैसे हमारा नाम है रामखेलावन । कोई ऐसन ही नाम हो ।''

मेरी बुद्धि चकमक हो रही थी । जल्दी से बोला, ''रामखेलावन के तोल पर आप शोरमचावन रख दीजिए।''

''शोरमचावन !'' वह उछल पड़े, ''बहुत बढ़िया । हम तीन बरिस से एही नाम तो खोज रहे थे । आप सचमुच बहुत बुद्धिमान हैं, मास्टर साहब'' और वे चले गए ।

बच्चे के गुण-दुर्गुण पर नाम रखने वाले वे अकेले ही नहीं थे ।

मेरे एक मित्र का पल्ला पकड़कर एक और साहब आए । पता नहीं लोगों को कहाँ-कहाँ से मालूम हो जाता है कि मैं बच्चों के नाम रखने में बहुत दक्ष हूँ ! मैंने उन्हें चलते-से दो-तीन नाम सुझाकर पीछा छुड़ाना चाहा तो वह खुले । बोले, ''ऐसे नहीं चलेगा, साहब ! हम तो आपको नामों का विशेषज्ञ समझकर आए हैं ।''

''आपको कैसा नाम चाहिए ?'' मैं ऐसे अवसरों पर स्वयं को उस दुकानदार की स्थिति में पाता हूँ, जो ग्राहक को तैयार माल से संतुष्ट न कर पाने के कारण, ऑर्डर पर माल बनवा देने का प्रस्ताव रखता है ।

''बात यह है, साहब !'' वह बोले, ''आप जानते हैं, किसको अपना बच्चा प्यारा नहीं लगता । हमें भी अपना बच्चा प्यारा है । वैसे आप उसे देखें तो आप भी मानेंगे कि वह बहुत प्यारा है । क्यों भाई साहब ।'' उन्होंने मेरे मित्र को टहोका दिया, ''ठीक कह रहा हूँ न ?''

''जी हाँ ! जी हाँ ! बहुत प्यारा बच्चा है,'' मेरे मित्र ने कहा ।

''पर साहब !'' वह फिर बोले, ''बहुत सताता भी है । हम चाहते हैं कि उसका कुछ ऐसा नाम रखा जाए कि उसका प्यारापन और सताना दोनों ही बातें कवर हो जाएँ। काम तो कठिन है, पर आप विद्‌वान हैं । कोई-न-कोई नाम तो सुझा ही देगें ।''

मैंने सोचा, काम वस्तुतः बीहड़ था । लोग भी कैसे-कैसे मूर्ख होते हैं। क्या शर्तें लाए हैं ! पर ठीक है, मैं भी विद्‌वान हूँ ।

मेरी बुद्धि ने एक चमत्कार किया । ऐसे चमत्कार वैसे कभी-कभी ही होते हैं पर हो जाते हैं ।

मैं बोला, ''आपकी शर्त बहुत कठिन है फिर भी प्रयत्न करना हमारा धर्म है । मेरे मन में एक नाम है। नाम अत्यंत साहित्यिक है और हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार, कवि तथा नाटककार जयशंकर 'प्रसाद' की अलौकिक प्रतिभा की उपज है ।'' मैंने देखा, वे श्रद्‌धा से नत होकर मेरी

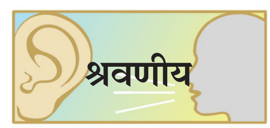

काका हाथरसी जी की हास्य-व्यंग्य कविता सुनकर सुनाइए ।

बात सुन रहे थे । मैं फिर बोला, ''प्रसाद जी ने भी बचपन के इन्हीं दोनों पक्षों को एक साथ देखा था और अपने एक गीत 'उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर' में उन्होंने प्यार और हठीले बचपन को 'दुर्ललित' कहा है । आप यही नाम अपने बच्चे का भी रख दें ।''

उनके चेहरे के भाव नहीं बदले । वे वैसे ही जड़ मुद्रा में बैठे रहे ।

''साहब ! हम नौकरी पेशा लोग तो हैं नहीं ।'' कुछ देर बाद, बड़ी खीझ के साथ बोले, ''फैशनेबल नाम हमारे घरों में नहीं चलते । हमारे बच्चे को तो बड़े होकर आढ़त का काम करना है, फर्म खोलनी है । हमें तो ऐसा नाम चाहिए, जो किसी फर्म का नाम भी हो सके। लटठ्राराम गेंदामल वगैरह-वगैरह । कोई ऐसा ही नाम बताइए ।''

मैं फिर चिंता में पड़ गया । ठीक है, नाम को लेकर जहाँ क्षेत्रीय आग्रह हैं, वहाँ व्यावसायिक आग्रह भी होंगे। आखिर किसी फिल्म एक्टर का नाम बिछावनमल तो नहीं हो सकता न ! उसी तरह फर्म का नाम... और फिर उनकी शर्तें !

मैं बोला, ''आप ऐसा करें, बच्चे का नाम प्यारूमल सताऊमल रख दें । फर्म का नाम जरूर लगेगा, बच्चे का चाहे न लगे ।''

उनकी आँखों का भाव पहली बार बदला और वह चमककर बोले, ''मारा ! अब ठीक है । वाह प्यारूमल सताऊमल एंड संस ! वाह भई, वाह !''

पर मैंने उसी दिन से नाम बताने का काम स्थगित कर दिया है । अब मैंने नामों का वर्गीकरण आरंभ कर रखा है-फर्मों के उपयुक्त नाम, नेताओं के उपयुक्त नाम, एक्टरों के उपयुक्त नाम इत्यादि । देखना यह है कि कितने वर्ग बनते हैं और फिर उनके अनुसार नामों की सूचियाँ बनाऊँगा और फिर नाम बताने का ही धंधा आरंभ कर दूँगा । उन नामों को पेटेंट करवा लूँगा और फिर उन पेटेंट नामों की रॉयल्टी देकर ही लोग उनमें से कोई नाम रख सकेंगे । आप अपनी आवश्यकता लिखित रूप से भेजें !

— ० —

पठनीय

शंकर पुणतांबेकर जी की कहानी 'रावण तुम बाहर आओ' पढ़िए और चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

चक्कर-भंबीरी पुं. सं.(हिं.)= भँवर, लगातार घूमना
निकुंज पुं. सं.(सं) = वन वाटिका
बीहड़ वि.(सं.) =ऊबड़-खाबड़, विषम
आढ़त स्त्री.सं.(हिं.) = दलाली लेकर माल बिकवाने का स्थान

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) तालिका पूर्ण कीजिए :

व्यक्ति और उनके बच्चे के लिए सुझाए गए नाम

व्यक्ति	नाम
____________	____________
____________	____________
____________	____________
____________	____________

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. लेखक द्‌वारा नामों का वर्गीकरण — -------, -------

२. नाम को लेकर किए गए आग्रह — -------, -------

(३) कारण लिखिए :

१. चौथे मकान में रहने वाले पड़ोसी परेशान थे: --------------------------------
----

२. लेखक को बुद्‌धिमान मास्टर साहब कहा गया : ------------------------------
----

३. इससे प्रदेश के लोगों की लेखक से अधिक नहीं निभती : ------------------------
----

४. लेखक की बुद्‌धि चक्कर खा गई : -------------------------------------
----

(४) दिए गए शब्दों में से उपसर्ग/प्रत्यय, मूल शब्द अलग करके लिखिए । इन्हीं शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यययुक्त शब्द बनाइए तथा वाक्य में प्रयोग करके अपनी कॉपी में लिखिए :

अतिरिक्त, दृष्टिहीन, प्रतिवर्ष, शिष्टता, अमूल्य, प्रभाती, असंतुष्ट, व्यावसायिक

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्द
सुरुचि	रुचि	सु	–	सुरुचिपूर्ण
राष्ट्रीय	राष्ट्र	–	ईय	अंतरराष्ट्रीय

अभिव्यक्ति ‘व्यक्ति की पहचान नाम से नहीं, गुणों से होती है’ इस विचार को स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

(१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए :

- आवाज अवरुद्ध होती जा रही थी। (सामान्य भूतकाल)

- मेम साहब को परदे पसंद आए थे। (पूर्ण वर्तमानकाल)

- मानव व्यक्तित्व के समान ही उसकी वाणी का निर्माण दोहरा होता है। (सामान्य भविष्यकाल)

- एक साथ काम पर आएँगे और एक साथ वापस घर लौटेंगे। (पूर्ण भविष्यकाल)

- आप इन दिनों फ्लाबेर के पत्र पढ़ रहे हैं। (पूर्ण भूतकाल)

- बस्ती के लिए यह तूफान प्रलय बनकर आया था। (अपूर्ण भूतकाल)

- मैं घर में रहकर तुम्हारे सब कामों में बाधा डालूँगी। (अपूर्ण वर्तमानकाल)

- मैं एक चीज पर लिखना शुरू करती हूँ। (अपूर्ण भविष्यकाल)
  ----

(२) आकृति में दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर आ रहा था। ---- ------काल

सामान्य वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भूतकाल ------------------------

अपूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

पूर्ण भूतकाल ------------------------

अपूर्ण भविष्यकाल ------------------------

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

महर्षि कर्वे १०५ वर्ष तक जीवित रहे । जब देश भर में उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई तो मुंबई की एक सभा में नेहरू जी ने कहा था, ''आपके जीवन से प्रेरणा और स्फूर्ति प्राप्त होती है । आपका जीवन इस बात की बेमिसाल कहानी है कि एक मानव क्या कर सकता है । मैं आपको बधाई देने नहीं आया वरन आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ ।''

भारतरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था, ''डॉ. कर्वे का जीवन इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि दृढ़ धारणावाला साधारण व्यक्ति भी सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में भी महान कार्य कर सकता है ।''

अण्णा साहब उन इक्के-दुक्के व्यक्तियों में से थे जो एक बार निश्चय कर लेने पर असाध्य कार्य को सिद्‌ध करने में लग जाते और उसे पूरा करके दिखा देते । भारत सदा से महान पुरुष रत्नों की खान रहा है और डॉ. कर्वे उन समाज सुधारकों में से थे जिन्होंने किसी सिद्‌धांत को पहले अपने जीवन में उतारकर उसे क्रियात्मक रूप दिया । हम प्रायः भाग्य को कोसा करते हैं और धन की कमी की शिकायत किया करते हैं परंतु यह उस व्यक्ति की कहानी है जो गरीब घर में पैदा हुआ, बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर स्वयं पढ़ाई की और इस अकेले व्यक्ति ने 'भारतीय महिला विद्‌यापीठ' की स्थापना की ।

प्रश्न :

१. ---

२. ---

३. ---

४. ---

५. ---

76HCLL